विज्ञान कहमुकरियाँ

राधा गुप्ता 'राधिका'

कहमुकरी लोकभाषा का एक छंद है। विज्ञान संचार को प्रभावी एवं जनव्यापी बनाने हेतु विज्ञान को लोकभाषा से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। कहमुकरी जैसा कि नाम से विदित है " कह कर मुकर जाना" । यह दो सखियों के बीच की बातचीत को दर्शाता है। इसमें चार पंक्तियां होती हैं। कहमुकरी छंद में पहली तीन पंक्तियों में किसी वस्तु के लिए एक पहेली सी होती है जिसका जवाब चौथी पंक्ति में छुपा होता है। चौथी पंक्ति "ए सखि साजन" या "क्यों सखि साजन" से शुरू होती है। अमीर खुसरो ने इस विधा पर बहुत काम किया। उनकी कई कहमुकरियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत है कुछ विज्ञान कहमुकरियाँ –

जिसने मुझको कभी न रोका
जो न देता कभी भी धोखा
अनजान डगर पर रखता ट्रैक
ए सखि! साजन ? "नहि गूगल मैप" ।

मुझे अपनी और वो खींचे
हर वस्तु साधे आँखें मींचे
अद्भुत है उसका आकर्षण
ए सखि! साजन ? नहि "गुरुत्वाकर्षण"।

बिना बात भी वो मुझे हंसाता
सारे दुख पल भर को भुलाता
प्रभाव देख होती सरप्राइज़
ए सखि ! साजन ? नहिं "नाइट्रस ऑक्साइड"।

मुझको मंज़िल पर पहुँचाए
नई राह पर साथ निभाए
विश्वास बड़ा ना उसमे ऐब
ए सखि ! साजन ? नहिं सखि "कैब"।

भरी नींद में मुझे जगाता
ज़िम्मेदारी याद दिलाता
तानें रहता अपनी आर्म
ए सखि! साजन ? नहीं "अलार्म"।

राधा गुप्ता 'राधिका'
एजुकेटर,कवयित्री, विज्ञान संचारिका
ए २ - ९७, जनकपुरी, नई दिल्ली ११००५८